(1) चादर के बाहर पैर पसारना —
— हैसियत से अधिक खर्च

(2) चार दिन की चाँदनी
फिर अंधेरी रात॥
— सुख क्षणिक होता है।

(3) चिड़िया उड़ गयी फुर्र —
— इष्ट की प्राप्ति से पहले गायब होना।
(मृत्यु)

(4) चिराग तले अन्धेरा —
अपना दोष स्वयं नहीं दिखता

(5) चींटी के पर निकलना —
विनाश की स्थिति तक पहुँचना

(6) चोर-चोर मौसेरे भाई —
— समान कार्य वाले व्यक्ति

(7) चूहे का जाया बिल ही खोदता है —
पैतृक गुणों का आना।

(8) छछूंदर के सिर पर चमेली
का तेल —
कुरुप का अधिक श्रृंगार

(9) जहाँ चाह वहाँ राह —
इच्छाशक्ति से सफलता का मार्ग
प्रशस्त होता है।

(10) जिसकी लाठी उसकी भैंस —
शक्तिशाली की विजय

(11) जैसे कंता घर रहे
वैसे रहे विदेश —
स्थान परिवर्तन से भी परिवर्तन
न होना।

(12) जैसी-करनी वैसी भरनी
— कर्मानुसार फल प्राप्ति।

(13) ढाक के वही तीन पात —
कोई हल न निकलना।

(14) तीन में न तेरा में
मृदंग बजावे डेरा में।
अगणित व्यक्ति का ढिंढोरा पीटना

(15) तू भी रानी मैं भी रानी
कौन भरेगा पानी —
सभी स्वयं को बड़ा समझेंगे तो कौन कार्य करेगा।

(16) शौकीन बुढ़िया
चटाई का लहंगा।
— शौक पूरा करते समय अपनी स्थिति न देखना।

(17) साँच को आँच नहीं —
सत्य का को कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

(18) साँप निकल गया
लकीर पीटते रहे —
कार्य का समय निकल जाने पर कार्य क्या करना।

(19) साँप मर जाए लाठी भी
न टूटे
— काम भी हो और हानि भी न हो'

(20) सावन हरे न भादों सूखे —
हर समय समान रहना।

(21) सावन के अन्धे को
सब जगह हरियाली दिखती है।"
स्वार्थ में अन्धा स्वार्थ ही हर जगह सिद्ध करता रहता है।

(२२) सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना —
कार्य आरम्भ बाधा शुरु।

(२३) सूरज को दीपक दिखाना —
ज्ञानी को उपदेश।

(२४) सहज पके सो मीठा होय —
आराम से किया गया काम
सुखकारी होता है।

(२५) हाथी के पाँव में
सबका पाँव।
— ओहदेदार व्यक्ति की हाँ में ही
सबकी हाँ।

(२६) हाथी निकल गया
दुम रह गयी।
— सब काम होगया

(२७) हाथ कंगन को आरसी क्या —
— प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या
आवश्यकता।

(२८) होनहार बिरवान के होत चीकने पात
— प्रतिभाशाली के लक्षण प्रारम्भ
में ही दिख जाते हैं।

(29) हंसा थे सो उड़ गए,
कागा भए दिवान।
— सज्जनों के पलायन से
सत्ता दुर्जनों के हाथ आजाती है।

(30) हमारी बिल्ली हमी
को म्याँउ।
— हमारी पालतू हमी से विद्रोह।
/पालनहार से विद्रोह।

(31) हर्रा लगे न फिटकरी
रंग चोखा आए।
— बिना कुछ किए ही
फल की प्राप्ति।

(32) भूखे भजन न होय गोपाला —
भूखे पेट कार्य
नहीं होता है।

(33) मरे को मारे शाहमदार
— गरीब को छोटे से बड़े
सभी सताते हैं।

(34) मान न मान मैं तेरा
मेहमान।
— जबरदस्ती गले पड़ना।

(35) मुँह में राम बगल
में छुरी।
— कपटपूर्ण व्यवहार

(36) मतलबी यार किसके
दम लगाया खिसके।
— स्वार्थी मित्र हमेशा
स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

(37) मेरी तेरे आगे
तेरी मेरे आगे।
— चुगल खोरी।

(38) रस्सी जल गयी
ऐंठ न गयी।
— आहित होने पर भी अकड़।

(39) राम नाम जपना
पराया माल अपना।
— धर्म आडम्बर से माल हड़पना।

(40) अधजल गगरी
छलकत जाय।
—
अल्पज्ञ का डींगें मारना।

(41) अपनी अपनी डफली
अपना अपना राग।
— अपना राग अलग अलापना / अपने कर्म के अनुसार फल

(42) अपना हाथ जगन्नाथ
— अपना कार्य स्वयं करना

(43) अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
— अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

(44) आँख के अन्धे गाँठ के पूरे।
— मूर्ख और धनी।

(45) आँखों के अन्धे नाम नयनसुख।
— गुणों के उल्टा कार्य।

(46) कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।
— दो असमान स्तर की वस्तुओं का मेल न होना।

(47) काठ की हाँडी केवल
एक बार चढ़ती है।

— कपटपूर्ण
व्यवहार बार-२ सफल
नहीं होता।

(48) का बरषा जब
कृषी सुखाने।

— समय चूकने पर काम

(49) खरी मजूरी चोखा
काम।

— नकद पैसे देने से
काम भी अच्छा होगा।

(50) खिसियानी बिल्ली
खम्भा नोचे।

— दूसरे के क्रोध को
अनुचित स्थान पर
निकालना।

(51) खोदा पहाड़ निकली
चुहिया — कम वस्तु की प्राप्ति
अधिक मेहनत।

(52) गंगा गए गंगादास
जमुना गए जमुनादास।

— वातावरण के अनुरूप बन जाना।

(53) गुरु कीजै जानि
पानी पीजै छानि।
— गुरु और पानी का सावधानी से चयन

(54) गुड़ खाये गुलगुलों से परहेज।।
— किसी वस्तु से दिखावटी परहेज।

(55) घर का भेदी लंका ढावै।
— अपने से धोखा।

(56) घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध।
— अपने स्थान पर गुणी की प्रशंसा नहीं होती है।

(57) घर की मुर्गी दाल बराबर।
— घर की वस्तु का महत्व नहीं।

(58) घर खीर तो बाहर खीर।
— घर में सुखी, सब जगह सुखी।

(59) घी कहाँ गिरा दाल में।
— व्यक्ती का स्वार्थ के लिए गिर जाना।

(60) घोड़े की लात
आदमी की बात।
— घोड़े की लात और आदमी की व्यंग्य बात कष्टदायी होती है।

(61) चमड़ी जाए पर
दमड़ी न जाए।
— कंजूस व्यक्ति।

(62) चलती का नाम गाड़ी।
— जिसका नाम चले वही ठीक।

(63) आगे कुआँ,
पीछे खाई।
— दोनो ओर मुसीबत।

(64) आगे नाथ
न पीछे पगहा।
— जिम्मेदारी से हीन व्यक्ति।

(65) आधी तज सारी को धाए।
आधी मिले न सारी पाए।
— लालच में सब समाप्त।

(66) आप भला तो जग भला —
— आप अच्छे सब अच्छे।

(67) आम के आम
गुठलियों के दाम।
— सब तरफ से/दोहरा लाभ।

(68) आए थे हरि भजन को
ओटन लगे कपास।
— किसी बड़े काम को छोड़ छोटे काम को करना।

(69) आसमान से गिरा
खजूर पे अटका।
— एक विपत्ति छूटी दूसरी गले पड़ी।

(70) आदमी- आदमी का अंतर
कोई हीरा कोई कंकर।
— हर आदमी भिन्न।

(71) उतर गई लोई
तो क्या करेगा कोई।
— बिल्लज होने पर, चिन्ता नहीं करना

(72) उल्टा चोर कोतवाल
को डांटे।
— दोष स्वीकार न करके सीना जोरी।

(73) उल्टे बांस बरेली को।
— परम्परा के विपरीत।

(74) एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा।
— अवगुणों में अवगुण आना।

(75) एक तो चोरी
ऊपर से सीना जोरी।
— गलती होने पर भी झगड़ा।

(76) एक पंथ दो काज।
— एक कार्य करने से दूसरा काम भी हो जाए।

(77) एक म्यान में दो तलवारें कैसे समा सकती हैं।
— एक ही स्थान पर दो विचार धाराएं नहीं चल सकती।

(78) एकै साधे सब सधे।
सब साधे सब जाए॥
— एक समय पर एक ही कार्य करना।

(79) ओखली में सिर देके मूसलों की क्या परवाह।
— कार्य प्रारम्भ करने के बाद विपत्तियों से घबराना नहीं है।

(80) ओछे की प्रीत बालू की भीत।
— नीच का प्रेम अस्थायी।

(81) कभी गाड़ी नाव पर
कभी नाव गाड़ी पर।
— कभी सुख, कभी दुःख।

(82) थोथा चना
बाजे घना।
— अल्पज्ञ अहंकारी

(83) दान की बछिया के दाँत
नहीं देखे जाते।
— फ्री/मुफ्त की वस्तु के गुण-दोष
नहीं देखे जाते।

(84) दाल भात में मूसलचंद —
किसी कार्य में व्यर्थ टाँग
अड़ाना।

(85) दिन दूनी रात चौगुनी -
गुणात्मक वृद्धि।

(86) दीवार के भी कान होते हैं।
— रहस्य खुल ही जाता है।

(87) दुविधा में माया मिली न राम।
— दुविधा में प्राप्ति नहीं होती।

(88) दूर के ढोल सुहावने —
दूर की वस्तु अच्छी लगती है।

(89) धोबी का कुत्ता
घर का न घाट का। — लालची कहीं का नहीं रहता

(90) न तीन मे
न तेरह मे। — महत्वहीन।

(91) न रहेगा बाँस
न बजेगी बाँसुरी। — झगड़े की जड़ काट देना

(92) नाच न जाने आँगन टेढ़ा — काम न आने पर
दूसरों को दोष।

(93) नाम बड़े दर्शन छोटे। — प्रसिद्धि के अनुरूप गुण न होना।

(94) न नौ मन तेल होगा
न राधा नाचेगी। — न साधन होगा, न काम।

(95) नीम हकीम
खतरा ए जान — अयोग्य डॉ० जान को खतरा

(96) नौ नगद न तेरह उधार —

नकद विक्रय नौ का ठीक
उधार " 13 का नहीं ठीक।

(97) नौ दिन चले अढ़ाई कोस —

धीमी गति से कार्य

(98) पढ़े फारसी बेचे तेल
ये देखा कुदरत का खेल।

— भाग्य वश योग्य व्यक्ति
तुच्छ कार्य करता है।

(99) बगल में छोरा नगर में
ढिंढोरा —

पास वस्तु, दूर तक ढूँढना।

(100) भई गति साँप छछूंदर केरी।

दुविधा की स्थिति।

Gyansindhu Coaching Classes
HINDI By-ARUNESH SIR